प्रवाह

अमर उजाला

नई दिल्ली ■ बृहस्पतिवार, 3 नवंबर 2016

निर्भीक पत्रकारिता के 67 साल
स्थापना वर्ष : 1948

कूटनीति सही समय पर सही बात कहने या करने से ज्यादा बड़ी चीज है

...बो बेनेट

व्यापार सुगमता के मामले में भारत की स्थिति भले ही बेहतर नहीं हुई हो, लेकिन विश्व बैंक और डीआईपीपी द्वारा जारी रिपोर्ट बताती है कि देश के अंदर विभिन्न राज्यों में कारोबार के मोर्चे पर स्वस्थ प्रतियोगिता चल रही है।

छोटे राज्य, बड़ी उपलब्धि

पिछले दिनों व्यापार सुगमता के संदर्भ में आई वैश्विक रिपोर्ट भारत के लिए उत्साहजनक भले न रही हो, लेकिन विश्व बैंक और भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) द्वारा विभिन्न राज्यों के संदर्भ में जारी की गई ताजा रिपोर्ट उम्मीद जगाती है। यह लंबे समय से कहा जाता रहा है कि भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में दिल्ली या मुंबई का आंकड़ा पूरे देश का आंकड़ा नहीं हो सकता। इसी को ध्यान में रखते हुए व्यापार सुगमता के मोर्चे पर राज्यवार आंकड़े पेश किए जाते हैं। कारोबार के लिए बेहतर माहौल मुहैया कराने वाले राज्यों की सूची में इस साल आंध्र प्रदेश और तेलंगाना संयुक्त रूप से पहले स्थान पर हैं। आंध्र तो पिछले साल भी गुजरात के बाद दूसरे स्थान पर था, लेकिन तेरहवें पायदान से शिखर पर पहुंचने की तेलंगाना की उपलब्धि हैरान करने वाली है। जाहिर है, इस नए राज्य में सिर्फ निर्माण गतिविधियां ही जोरों पर नहीं हैं, बल्कि रोजगार की दृष्टि से भी यह तेजी से उभरते राज्यों में है। विश्व बैंक ने यह भी रेखांकित किया है कि छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड और राजस्थान जैसे कम आय वाले चार राज्यों का सूची में शुरुआती सात राज्यों में होना एक बड़े बदलाव का सूचक है। शीर्ष दस राज्यों में से आठ में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग की सरकारें हैं। जो एक और तथ्य उत्साहित करने वाला है, वह यह कि इस बार सोलह राज्यों में सुधारों पर अमल पचहत्तर फीसदी से अधिक हुआ है, जबकि पिछले साल एक भी राज्य इस आंकड़े तक नहीं पहुंच पाया था। सूची में उत्तराखंड नौवें स्थान पर और उत्तर प्रदेश चौदहवें स्थान पर जरूर हैं, पर सुधारों पर अमल की दृष्टि से देखें, तो इन दोनों राज्यों का प्रदर्शन बेहतर है। मसलन, सुधारों पर नब्बे फीसदी से अधिक अमल वाले उत्तराखंड को विश्व बैंक ने 'लीडर्स' की श्रेणी में रखा है, तो चौरासी प्रतिशत से ज्यादा अमल वाले उत्तर प्रदेश को उभरते राज्यों की कोटि में शामिल किया गया है। हालांकि हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, केरल, गोवा, पूर्वोत्तर के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के निराशानजक प्रदर्शन सबूत हैं कि इन राज्यों को कारोबार के मामले में आगे ले जाने के लिए गंभीर प्रयासों की जरूरत है। उम्मीद करनी चाहिए कि यह रिपोर्ट दौड़ में पीछे छूटते राज्यों को ऊपर उठने को प्रेरित करेगी।

बांग्लादेश के बाजू में बीजिंग

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ब्रिक्स सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आने से पहले चौबीस घंटे ढाका में रुके थे। ऐसा लगता है कि ढाका में जो कुछ हुआ, वह भू-राजनीतिक दृष्टि से ब्रिक्स सम्मेलन के नतीजों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। पिछले तीस वर्षों में चीन के किसी राष्ट्रपति का यह पहला बांग्लादेश दौरा था। इस दौरान बीजिंग ने अपनी आर्थिक ताकत के प्रदर्शन की कोशिश की। इससे यह आशंका भी पैदा होने लगी है कि क्या इससे भारत-बांग्लादेश के रिश्ते पर भी असर पड़ेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि चीन ने बांग्लादेश को 24 अरब डॉलर के क्रेडिट लाइन की घोषणा की। यह किसी भी विदेशी मुल्क से बांग्लादेश को मिला सबसे बड़ा क्रेडिट लाइन है। इसने भारत के दो अरब डॉलर के क्रेडिट लाइन को काफी पीछे छोड़ दिया है। बांग्लादेश और चीन की कंपनियों ने भी 13.6 अरब डॉलर के व्यापार और निवेश समझौतों पर हस्ताक्षर किए। शी जिनपिंग की यात्रा से बांग्लादेश काफी उम्मीदें लगाए बैठा था। इस यात्रा के नतीजे ने बांग्लादेश को उत्साहित ही किया। बांग्लादेश चैंबर्स ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री (एफबीसीसीआई) के प्रमुख का कहना था कि इन सौदों से बांग्लादेश द्वारा इस्लामी कट्टरपंथियों के खिलाफ छेड़े गए अभियान के बाद ढाका के सुधरते सुरक्षा हालात का पता चलता है। ये समझौते इशारा करते हैं कि बांग्लादेश एक सुरक्षित निवेश गंतव्य है।

चीनी कंपनियों द्वारा ज्यादातर निवेश बुनियादी संरचनाओं के विकास, चमड़ा, रेडीमेड गारमेंट्स, दवा,ऑटोमोबाइल्स और अन्य क्षेत्रों में किए जाएंगे। बांग्लादेश चीनी निवेशकों के लिए विशेष रूप से सामरिक महत्व के चटगांव बंदरगाह के नजदीक इंडस्ट्रियल पार्क स्थापित करने पर सहमत हो गया है। इससे लगता है कि इन क्षेत्रों के चीनी उद्योग बांग्लादेश चले आएंगे, जहां उन्हें सस्ते श्रम का भी फायदा मिलेगा।

चीन बांग्लादेश का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, पर व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में झुका हुआ है। बांग्लादेश 80.8 करोड़ डॉलर का निर्यात चीन को करता है, जबकि चीन से 10 अरब डॉलर की वस्तुओं का आयात करता है। बांग्लादेशी व्यापारी चीन के बाजार में ज्यादा पहुंच की मांग करते रहे हैं। चीन ने उन्हें कुछ सुविधाएं दी भी हैं, पर व्यापार असंतुलन की खाई पाटने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। इस असंतुलन के बावजूद दोनों मुल्कों ने मुक्त व्यापार समझौते की व्यावहारिकता का अध्ययन करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है। जबकि ढाका अब तक चीन के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते के प्रति अनिच्छुक रहा है। चीन ने आर्थिक संबंध मजबूत बनाने के साथ द्विपक्षीय रिश्ते को सामरिक साझेदारी के रूप में बदलने का फैसला किया है। इसे भी भारत के क्षेत्रीय प्रभाव को चुनौती देने के कदम के रूप में देखा जा रहा है।

गौरतलब है कि बांग्लादेश शी जिनपिंग की बेल्ट रोड पहल का समर्थन कर रहा है। उसके मुताबिक इससे व्यापार और परिवहन को बढ़ावा मिलेगा तथा एशिया से यूरोप के बीच बेहतर संपर्क उपलब्ध होगा। जबकि इस परियोजना पर भारत को आपत्ति है। वह मानता है कि यह इस विशाल क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने की चीन की कोशिश है। दरअसल बांग्लादेश बीसीआईएम (बांग्लादेश, चीन, भारत और म्यांमार) पहल का कट्टर समर्थक है। बीसीआईएम और बेल्ट रोड पहल समर्थित क्षेत्र एक ही है। वास्तव में बीसीआईएम परियोजना को व्यापक बेल्ट रोड पहल का हिस्सा माना जा सकता है। बेल्ट रोड पहल को बांग्लादेश का समर्थन नया नहीं है, पर इसके भू-राजनीतिक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं।

हाल में भारतीय राजनय ने पाकिस्तान को क्षेत्रीय स्तर पर अलग-थलग कर दिया है। बांग्लादेश के साथ भारत का रिश्ता अभी सबसे अच्छा है। उड़ी हमले के बाद भारत को बांग्लादेश का भरपूर समर्थन मिला। बांग्लादेश और अफगानिस्तान, दोनों ने पाकिस्तान में होने वाले सार्क सम्मेलन का बहिष्कार किया, हालांकि इसके पीछे उनके अपने कारण थे। दरअसल पाकिस्तान बांग्लादेश में चल रहे युद्ध अपराध की सुनवाई की आलोचना करता रहा है, जबकि ढाका इसे अपने आंतरिक मामले में हस्तक्षेप मानता है। हालांकि दूसरे देशों के बहिष्कार की अनिवार्यता नहीं थी, क्योंकि सार्क एक आम सहमति पर आधारित संगठन है। पर इन देशों के सार्क सम्मेलन में हिस्सा लेने से अनिच्छा जताने से पता चलता है कि वे भी मानते हैं कि पाकिस्तान क्षेत्रीय शांति और सहयोग के लक्ष्य में बाधक है।

अगर चीन का आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव दक्षिण एशिया में निरंतर बढ़ता रहता है, तो भारत को सार्क के मामले में छोटा-सा जो कूटनीतिक लाभ मिला है, वह खत्म हो सकता है। दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए चीन सार्क में शामिल होना चाहता है और पाकिस्तान, नेपाल और मालदीव उसके मजबूत तरफदार हैं। जिस तरह चीन दक्षिण एशियाई देशों को द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते में शामिल करना चाहता है, उससे संभव है कि वह उन्हें सार्क की पूर्ण सदस्यता दिलाने में सहयोग करने के लिए भी कहता होगा। वह उन्हें पाकिस्तान समर्थक दृष्टिकोण अपनाने के लिए भी प्रेरित कर सकता है।

हालांकि इसकी कम ही संभावना है कि बांग्लादेश उसके प्रभाव में आ जाएगा, क्योंकि शी जिनपिंग के साथ बैठक में शेख हसीना ने पाकिस्तान के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर की थी। अफगानिस्तान जैसे देश भी पाकिस्तान को अपनी समस्याओं के स्रोत के रूप में देखते हैं। पर चीन के बढ़ते प्रभाव से हालात बदल सकते हैं, क्योंकि इन देशों की आर्थिक निर्भरता चीन पर बढ़ती जा रही है। दक्षिण पूर्व एशिया में चीन ऐसा कर चुका है, क्योंकि हाल ही में फिलीपींस दक्षिण चीन सागर में चीन के आक्रामक तेवर के बावजूद पाला बदलकर चीन के खेमे में शामिल हो गया है। भारत को दक्षिण एशिया में चीन के हर कदम पर सतर्क निगाह रखनी होगी, जहां बीजिंग अपना प्रभाव जमाने की कोशिश में है।

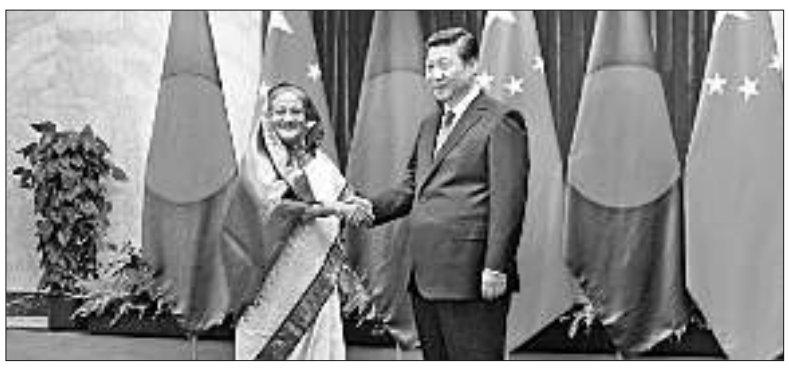

अगर चीन का प्रभाव दक्षिण एशिया में निरंतर बढ़ता रहता है, तो भारत को सार्क के मामले में छोटा-सा जो कूटनीतिक लाभ मिला है, वह खत्म हो सकता है।

आनंद कुमार

आईडीएसए में एसोसिएट फेलो

बचपन कठिन था पर उतना भी उदास नहीं

अंतर्ध्वनि

>> एलिस मुनरो

एक तरह से कहें, तो मैं पूरे जीवन में अपनी निजी जिंदगी के बारे में ही कहानियां लिखती रही। मेरे पिताजी फॉक्स मिंक फार्म चलाते थे। हमारा घर सड़क के अंतिम छोर पर था। मेरी मां को चालीस की उम्र में ही पार्किंसन्स के रोग ने घेर लिया था। इसलिए किशोरावस्था से ही मुझे घर के कामकाज का दायित्व संभालना पड़ा। मैं हमेशा अपने घर को साफ-सुथरा रखना चाहती थी और घर के हर

सदस्य के कपड़ों पर इस्तरी करती थी। यह स्वयं को जवाबदेह बनाने का मेरा अपना तरीका था। मैं अपनी मां के प्रति बहुत दयालु थी। मां की याद संभवतः मेरे जीवन की सबस महत्वपूर्ण चीज है। मां के प्रति जो कोमलता अभी मैं महसूस करती हूं, वह पहले नहीं थी। जब आप बड़े हो रहे होते हैं, तो मां की इच्छाओं और जरूरतों से बिल्कुल अलग रहना होता है और आपको अपनी राह स्वयं बनानी होती है और यही मैंने किया। निश्चय ही उसकी स्थिति बहुत नाजुक थी, लेकिन वही मेरे शक्ति का स्रोत भी थी। इसलिए मेरे जीवन में उसका केंद्रीय स्थान रहा है। लेकिन जब उसे मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी, तभी मैंने उससे किनारा कर लिया। पर यह मैंने उसकी मुक्ति के लिए किया।

बेशक मेरा बचपन बहुत कठोर था, लेकिन उतना उदास भी नहीं। कल्पनाएं करने और कहानियां लिखने की मेरी एक निजी दुनिया थी, जिसमें मैं खुश थी। हमारे यहां महिलाओं को शिक्षक बनने के लिए शिक्षित होने के लिए कहा जाता था, इसलिए मेरे लेखन का किसी ने विरोध नहीं किया।

नोबेलजयी कनाडाई लेखिका

मंजिलें और भी हैं

>> अनिरुद्ध प्रसाद

गांव के बच्चे पूछते थे कि इतना साफ कैसे रहते हो

इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद केमिकल प्रोसेस डिजाइन में मास्टर्स डिग्री के लिए मैं मैनचेस्टर चला गया था। भारत वापस लौटा, तो अच्छी नौकरी मिल गई। मुंबई में मेरा ज्यादातर वक्त ऑफिस आने-जाने में ही बीत जाता था। कॉरपोरेट नौकरी मुझे रास नहीं आ रही थी। मुझे लगा कि ज्यादातर लोग शायद इसी तरह रोजमर्रा की समस्याओं के प्रति अभ्यस्त होकर जीने लगते हैं। समस्याओं से निजात पाने की कोशिश करने के बजाय वे उन्हें नजरंदाज कर देते हैं। इस विचार को मैंने ग्रामीण भारत के खांचे में रखकर सोचना किया और एक दिन नौकरी छोड़ दी। महीनों बेरोजगार रहा। इंटरनेट पर सर्फिंग करते वक्त एसबीआई यूथ फॉर इंडिया फेलोशिप के बारे में पता चला। गांव में रहकर काम करने के लिए मुझे यह बेहतर मौका लगा। मेरा जन्म चेन्नई में हुआ था, मगर वहां की संस्कृति और परंपराओं के बारे में मुझे बहुत जानकारी नहीं थी, क्योंकि मैं महाराष्ट्र में पला-बढ़ा था। अपनी परंपरा और संस्कृति के करीब जाने के लिए मैंने तमिलनाडु के कोली हिल्स के ग्रामीण लोगों के बीच काम करने का फैसला किया। यह एक जनजातीय इलाका है। मैंने वहां देखा कि स्थानीय किसान मोटे अनाज के उत्पादन और उसका बाजार तलाशने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन इसका पर्याप्त लाभ उन्हें नहीं मिल पा रहा था। ज्यादातर किसान एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फांउडेशन द्वारा स्थापित मिलेट वैल्यू चेन सिस्टम से जुड़े थे। वे एक स्वयं सहायता समूह में शामिल थे और 'कोली हिल्स नेचुरल फूड्स' नामक ब्रांड से अपना उत्पाद बाजार में बेच रहे थे। लेकिन उत्पादों की पैकेजिंग बेहतर नहीं थी। पैकेजिंग की लागत अधिक थी और काफी निवेश के बावजूद ये उत्पाद ग्राहकों को आकर्षित नहीं कर पा रहे थे। पैकेजिंग बढ़िया न होने के कारण उत्पादों की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही थी। दरअसल, लोगों को बाजार की वास्तविकता का अंदाजा ही नहीं था। लोगों से इस समस्या के बारे में बातचीत शुरू की। ब्रांड नाम बेहतर बनाने के लिए लोगो नए सिरे से डिजाइन किया गया और और पैकेजिंग लागत कम करने का काम शुरू हुआ। अंततः स्टिकर समेत पैकेजिंग लागत चालीस प्रतिशत तक कम हो गई। ग्राहकों तक पहुंचने तक उत्पादों की गुणवत्ता को सुरक्षित बनाए रखने में भी मदद मिली। और उत्पाद दिखने में आकर्षक लगने लगे। स्थानीय युवाओं की कैपेसिटी बिल्डिंग के प्रयास किए गए। उन्हें बेसिक कंप्यूटर ट्रेनिंग दी गई। क्वालिटी कंट्रोल और एकाउंटिंग के बारे में भी बताया गया। मेरा आइडिया यही था कि बाहरी मदद न होने पर भी लोग अपना काम करते रहें। आखिरकार किसानों को उनके उत्पादों के बेहतर दाम मिलने लगे और उत्पादन लागत कम होने से मुनाफा भी बढ़ गया। गांव के बच्चे मुझसे पूछते थे कि आप इतने साफ-सुथरे कैसे रहते हैं? इसका मतलब यह था कि बच्चों को साफ-सफाई का महत्व पता था। बस उन्हें सही सलाह और सुविधाओं की जरूरत थी। इसके बाद गांव के लोगों को स्वच्छता के बारे में भी जागरूक किया। इन लोगों के बीच काम करते हुए अब मैं समझ चुका हूं कि परिस्थितियां कैसी भी हों, लोग बेहतर जिंदगी चाहते हैं। लेकिन विकल्पों का न होना और अवसरों की कमी उन्हें पीछे धकेल देती है।

अब मैं समझ चुका हूं कि परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, अब लोग बेहतर जिंदगी चाहते हैं।

छोटे शहर का बड़ा लेखक

हृदयेश की कहानियां न्याय विभाग की उनकी नियमित नौकरी की तरह व्यवस्थित थीं। रचना और पात्रों का परिवेश तथा पृष्ठभूमि की बारीकियां उन्हें खास बनाती थीं। उनके रचनाकर्म पर *मूलचंद गौतम* का आलेख

मुंबई, दिल्ली, बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ की तुलना में शाहजहांपुर छोटा शहर है। पर जब उसका क्रांतिकारी इतिहास छोटा नहीं, तो लेखक क्यों छोटा होने लगा! भुवनेश्वर उसके आदि लेखक थे, जिनकी ऐतिहासिक टक्कर महाकवि निराला से हुई थी। वह दुर्योग प्रखर प्रतिभा के धनी भुवनेश्वर पर भारी पड़ गया। उनका जो दुखद अंत हुआ, उसके मूल में इस टक्कर का भी हाथ था।

हृदयेश के चेहरे-मोहरे पर तो छोटे शहर का लेवल फेविकोल से इस तरह फिट होकर चिपक गया था कि आखिर तक छुड़ाए नहीं छूटा। चंडीप्रसाद हृदयेश से परिचित पुराने लोग प्रायः शाहजहांपुर के हृदय नारायण मेहरोत्रा उर्फ हृदयेश को कम जानते थे। उनका एक कहानी संग्रह *छोटे शहर के लोग* नाम से क्या छपा, जैसे यह उनका स्थायी भाव हो गया। भले वह गाहे-बगाहे बड़े शहरों के घाघ महंतनुमा लेखकों-संपादकों-प्रकाशकों से मिलकर उपकृत और धन्य होते रहे, लेकिन छोटू की चिप्पी से पीछा नहीं छुड़ा पाए। यहां तक कि बेटे की कृपा से वह अमेरिका भी हो आए, पर उससे ज्यादा दुखद यात्रा उनके लिए कोई नहीं रही। हवाई अड्डे से बेटे के घर तक, फिर बीमारी की चपेट में और अंततः खाली हाथ बुद्धू की तरह घर वापस। उनकी आत्मकथा *जोखिम* इन्हीं चिप्पियों से तैयार है।

हृदयेश की कहानियां न्याय विभाग की उनकी नियमित नौकरी की तरह व्यवस्थित थीं। बारीक से बारीक तफसील उनसे छूटती नहीं थी। रचना और पात्रों का परिवेश तथा पृष्ठभूमि की बारीकियां उन्हें खास बनाती थीं या कहें कि हृदयेश मेहनत करके उन्हें खास बनाते थे। *सफेद घोड़ा काला सवार* का यथार्थ उनका अच्छी तरह रात-दिन देखा-भोगा हुआ यथार्थ था। राणा प्रताप के चेतक की तरह वह हाकिमों की भाषा और इशारा अच्छी तरह समझते थे। जहां नहीं समझ पाते, वहां अपनी हिकमतों से काम निकालते थे। इन्हीं तरीकों के कच्चे-पक्के रह जाने में रचनाएं कहीं कमजोर रह जाती थीं, जैसे-*दंडनायक* की फैंटेसी। हृदयेश की कहानियों का साहित्य में एक खास मुकाम है। *सारिका* की जिस कहानी प्रतियोगिता में संजीव की कहानी *अपराध* को प्रथम पुरस्कार मिला था, उसी में उनकी कहानी को सांत्वना के लायक समझा गया था। यह हृदयेश की विडंबना नहीं थी, दौर ही बदल गया था।

हृदयेश

हृदयेश को पहल सम्मान मिला। उस अवसर पर मैंने उनकी स्पेशल साइकिल का जिक्र किया था, जिसे चलाना उन्हीं के बस की बात थी। एक बार मैं उस साइकिल से उन्हें पीछे बिठाकर हिंदी के स्थानीय प्राध्यापक नित्यानंद मुद्गल से मिलने के लिए चला। थोड़ा असंतुलित होते ही पैर न टिक पाने की वजह से हम दोनों ही मुश्किल से गिरते-गिरते बचे। मुझे लगा कि हृदयेश जी मुझे खींचें, इससे बेहतर है कि मैं उन्हें खींचूं। मुझे क्या पता था कि जिसका साज उसी को साजे। एक बार वीरेन डंगवाल के कहने से मैंने उनका एक साक्षात्कार लिया था। प्रश्नों के लिखित उत्तर उन्होंने मुझे डाक से भिजवा दिए थे, ताकि गलती की कोई गुंजाइश नहीं रहे।

हृदयेश जी से मेरा लंबा पत्राचार रहा। पत्रों का जवाब देने में वह देरी नहीं करते थे। हृदयेश का सीधा-सादा सरल जीवन ही जैसे उनकी रचनाएं थीं। अपनी संतति को भी उन्होंने इन्हीं उसूलों से गढ़ा था। इसीलिए वह आत्ममुग्धता की हद तक उन्हें प्यार करते थे। हंसी-दिल्लगी की बात अलग है, अन्यथा उन्हें अपनी रचनाओं की कटुता की हद तक की जाने वाली आलोचना नापसंद थी। ऐसे सच्चे और खरे हृदयेश के निधन से हिंदी साहित्य ने बहुत कुछ खो दिया है।

खुली खिड़की

जेल तोड़कर भागते कैदी

हाल ही में भोपाल केंद्रीय जेल से भागे सिमी के आठ कार्यकर्ताओं को एक मुठभेड़ में मार गिराया गया। लेकिन पिछले पांच वर्षों का आंकड़ा देखें, तो जेल तोड़ने की सबसे ज्यादा घटनाएं राजस्थान में हुई हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के मुताबिक, पिछले पांच वर्षों में जेल तोड़कर भागने की कुल 83 घटनाएं हुईं, जिनमें से 41 वारदात राजस्थान में हुईं।

जेल तोड़कर भागने की घटनाएं (2011 से 2015)

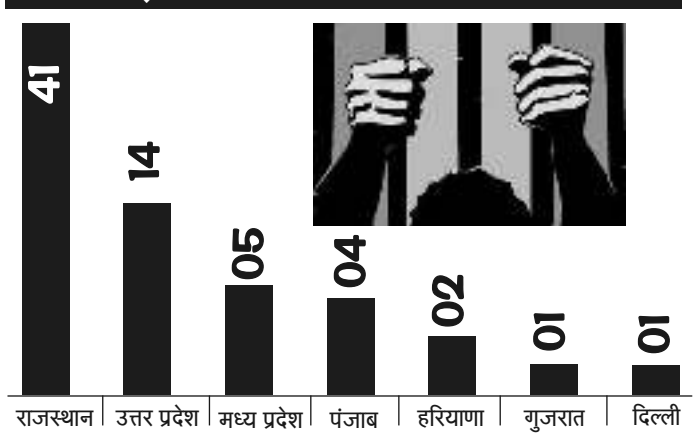

रूप का नशा

सेठ धनदत्त के यहां एक नट आया। उसने अपनी कला का प्रदर्शन किया। कला की जगह नट की कन्या सेठ के पुत्र स्वप्नदत्त को भा गई। वह हठ कर बैठा कि मैं इसी से विवाह करूंगा। यह मुझे न मिली, तो आत्मघात कर लूंगा। सेठ क्या करते! स्वप्न उनका एकमात्र पुत्र था, उसके हठ के आगे झुकना पड़ा। उन्होंने नट के सामने प्रस्ताव रखा कि वह अपनी पुत्री दे दे; किंतु नट गुस्सा हो उठा कि हम कंगाल ही सही; किंतु किसी का सम्मान पैसों से नहीं खरीदा जा सकता।

यह अपमान सहकर भी सेठ धनदत्त शांत रह गए। अंत में सेठ के अनुनय-विनय पर नट प्रसन्न हुआ। उसने कहा-आपका पुत्र मेरे साथ बारह वर्ष रहकर मेरी कला का अभ्यास करे। जिस दिन वह पुरस्कृत होगा, उसी दिन मेरी पुत्री का उससे विवाह हो जाएगा। सेठ के पुत्र ने नट की बात स्वीकार कर ली। कठोर श्रम करके वह उस विद्या में प्रवीण हो गया। नट के साथ स्वप्नदत्त वाराणसी गया। वहां का नरेश उसकी कला देखकर प्रसन्न हो गए। नरेश ने कहा-हम तुम्हारी कला पर प्रसन्न हैं, मांगो क्या मांगते हो? उस समय स्वप्न एक बहुत ऊंचे स्तंभ के सिरे पर बैठा था। उसकी दृष्टि दूर एक भवन के द्वार पर थी। वह देख रहा था कि द्वार पर एक मुनि खड़े हैं और एक युवती उन्हें भिक्षा देने आई है। मुनि ने उसमें से थोड़ी ही सामग्री ली और बोले-बस करो, बहन! काफी है। इसी समय नरेश का संबोधन उसके कान में पड़ा-नट कुमार! स्वप्न चौंक पड़ा-कौन नटकुमार! एक नगर-सेठ का पुत्र मैं और मेरा यह दीवानापन! स्वप्नदत्त का नशा उतर गया।

-चाणक्य सेन

सत्संग

हरियाली और रास्ता

रिची, जूडो टीचर और जीत

उस लड़के की कथा, जिसने हाथ खोने के बावजूद जीत हासिल की।

रिची स्कूल से घर लौट रहा था। उसने देखा कि एक बुजुर्ग महिला सड़क पार कर रही थी और पीछे से एक स्कूल बस आ रही थी। रिची ने कई बार आवाज लगाई, पर उस महिला को सुनाई नहीं पड़ा। अंततः रिची ने बस के आगे कूदकर महिला की जान बचा ली। वह महिला तो बच गई, पर इस प्रक्रिया में रिची गंभीर रूप से घायल हो गया। अस्पताल में रिची का बायां हाथ काटना पड़ा। एक जूडो टीचर ने यह सब अपनी आंखों के सामने होते देखा था। उसने तय किया कि वह रिची को जूडो का प्रशिक्षण देगा। रिची के

अस्पताल से निकलने के कुछ दिन बाद से ही जूडो टीचर रोज उसके घर आने-जाने लगा। शुरू में रिची इसके लिए तैयार नहीं हुआ, लेकिन उसके परिवार वालों ने उसे मना लिया। जूडो टीचर ने रिची का प्रशिक्षण शुरू कर दिया। लेकिन वह रोज उसे सिर्फ एक ही दांव सिखाते थे। कभी-कभी रिची आक्रोश में भी आ जाता था कि टीचर उसे और कोई दांव क्यों नहीं सिखाते। यह सिलसिला दो साल तक चलता रहा। फिर एक दिन जूडो मुकाबले की घोषणा हुई। रिची को उम्मीद नहीं थी कि उसे इसमें जगह मिलेगी। उसे पता चला कि जूडो टीचर ने उसे इस मुकाबले में जगह दिलवाई है।

पहले मैच में रिची की काफी धुलाई हुई। लेकिन अंत में उसने वही दांव चला, जो टीचर ने सिखाया था। उसने अपने प्रतिद्वंद्वी को चित्त कर दिया। इसी एक दांव की मदद से वह एक के बाद एक मैच जीतकर फाइनल तक पहुंच गया। फाइनल में फिर रिची की धुलाई हुई। उसके प्रतिद्वंदी ने उसे लगभग धराशायी ही कर दिया था। एक समय ऐसा आया, जब लग रहा था कि प्रतिद्वंद्वी उसे बेदम कर देगा। रेफरी सीटी बजाने जा ही रहा था कि जूडो टीचर ने उसे रोक लिया, क्योंकि अभी थोड़ा समय बचा था। टीचर ने कहा, मुझे अब भी विश्वास है कि रिची जीत जाएगा। रिची के प्रतिद्वंद्वी ने क्षण भर के लिए अपना गार्ड नीचे क्या किया कि रिची ने मौके का फायदा उठाकर वही पुराना दांव चला। प्रतिद्वंद्वी वहीं ढेर हो गया। इस तरह रिची ने जूडो मुकाबला जीत लिया। बाद में टीचर से रिची ने पूछा, आपने मुझे केवल एक ही दांव सिखाया, फिर भी मैं जीत गया। यह कैसे हुआ? टीचर बोले, इसका कारण यह है कि तुमने केवल एक दांव पर अपना ध्यान केंद्रित किया और उसके उस्ताद बन गए। वह कोई आसान दांव नहीं था, पर अपनी मेहनत से तुमने उस पर महारत हासिल कर ली। इस दांव का एक ही तोड़ है कि कोई तुम्हारा बायां हाथ पकड़ कर घुमा दे। पर तुम्हारा बायां हाथ है ही नहीं।

कभी-कभी अपनी कमजोरी ही सबसे बड़ी ताकत बन जाती है।